वर्षा ऋतु विज्ञान एवं ज्योतिषीय यंत्र व योग

*प्रो. शालिनी सक्सेना

भारतीय जनमानस ग्रामीण पृष्ठभूमि में निवास करता है और प्रकृति से सहज सम्बन्ध के कारण उसका सूक्ष्म निरीक्षण करता है। उसके प्राकृतिक ज्ञान के समक्ष आज का वैज्ञानिक चिन्तन भी अनेकशः आश्चर्य चकित हो जाता है। हमारे पूर्वजों के गहन अनुभव से निर्मित हुए सूत्र आज भी सटीक हैं। वर्षा का सम्बन्ध सदैव प्राणीमात्र के जीवन से जुड़ा है और कृषिप्रधान भारतवर्ष की ग्रामीण पृष्ठभूमि के लिए तो वर्षा प्राणभूता ही कही जा सकती है। अतः वर्षा के पूर्वानुमानों के सम्बन्ध में हमारे पूर्वजों ने प्राकृतिक अनुभव एवं निरन्तर प्रकृति के गहन अध्ययन के माध्यम से कुछ ऐसे सूत्र निर्मित किए जिनके द्वारा प्राकृतिक परिवर्तनों का पूर्वानुमान किया जाने लगा। ऐसे अनुभवों से निर्मित सूत्र एवं सिद्धान्त वर्षा का पूर्वानुमान करने में आज के मौसम वैज्ञानिकों का भी सहयोग करते हैं। ये सूत्र एवं सिद्धान्त ग्रह नक्षत्रों की स्थिति से जुड़े होने के कारण जहाँ सामान्य जन के ज्योतिषीय ज्ञान की सूचक हैं वहीं पर्यावरणीय परिवर्तनों से सम्बद्ध होने के कारण वैज्ञानिक भी हैं।

ऋतुविज्ञान– ऋतुओं से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान है– '**विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानमिति।**' 'ऋतु' पद ऋत् धातु से निर्मित है। प्रकृति के नियमों तथा निरन्तरता को अभिव्यक्त करने वाली ऋतुएँ हैं, जिनमें प्रकृति गतिशील रहती है तथा अभिवृद्धि करती है। नैतिक अथवा प्राकृतिक नियम तथा सत्य का विचार ही 'ऋत्' है। प्रकृति में जो निरन्तरता दिखाई देती है उसका मूल कारण ऋत् ही है। ऋतु और ऋत् के मूल में धातु है जिसका अभिप्राय है क्रिया अथवा गति। महर्षि यास्क ने इसी तथ्य को स्पष्ट किया है– '**ऋतु आर्तेर्गतिकर्मणः।**[1] प्रकृति में संवत्सरात्मक काल सत्ता में क्रिया की उत्पादक अथवा गतिप्रदाता तत्त्व ही ऋतुएँ हैं।

हलायुध कोष में 'अर्तेश्च तुः' अर्थात् 'ऋ' धातु में '**उणादयोर्बहुलं छन्दसि**' सूत्र से 'तु' प्रत्यय तथा कित्वत् भाव होकर ऋतु पद सिद्ध किया है।[2] जिसका अर्थ है– कालविशेष, समय, उपयुक्त काल अथवा यज्ञ का श्रेष्ठ काल। प्रसिद्ध मौसम वैज्ञानिक मोईवर विलियम्स के अनुसार यज्ञायोजन का निर्धारित काल ही 'ऋतु' है। निश्चित तिथि या काल भी ऋतु कहलाता है। स्त्री का रजोदर्शन, युगारम्भ, शासन, प्रकाश, निर्धारित प्रक्रिया आदि भी ऋतु पद के विभिन्न अर्थ हैं। इनमें से सर्वप्रसिद्ध अर्थ 'काल' अथवा 'प्रसिद्ध काल' है।

ऋतुओं का विवेचन ऋग्वेद में हुआ है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में ऋतु पद का उल्लेख प्राप्त होता है। वहाँ इन्द्र, मरुत आदि देवताओं से ऋतुओं के साथ सोम पीने की प्रार्थना की गई है। जो ऋतु अनुसार सोम की मात्रा में न्यूनाधिक अथवा सोमरस निर्माण प्रक्रिया में परिवर्तन का सूचक है–

'इन्द्र सोमं पिब ऋतुनाऽऽत्वा विशन्तिवन्दवः। मत्सरासस्तदोकसः।'[3]

देवताओं ने बसन्त, वर्षा और शरद ऋतुओं को बनाया।[4] इन्द्र का ऋतुओं से घनिष्ठ सम्बन्ध बताया गया है। वह ऋतुओं के नियमों का निर्धारण करता है।[5] आरोग्य के लिए ऋतु के अनुसार आहार का निर्धारण इन्द्र ने ही किया है।[6] द्वितीय मण्डल में भी ऋतु अनुसार उपभोग हेतु प्रार्थना की गई है। धनप्रदाता विभिन्न देवता ऋतु अनुसार हवियाँ ग्रहण करें तथा ऋतु सायुज्य को प्राप्त करें।[7]

सप्त नाड़ी चक्र–

28 नक्षत्रों (अभिजित नक्षत्र को मिलाकर) को सात नाड़ियों में बांटने पर चार–चार नक्षत्र एक नाडी में आते हैं। लिखने का क्रम कृतिका (3) सबसे पहले लिखें और आखिरी नाड़ी में आश्लेषा (9) आयेगा, आखिर से शुरू करके आश्लेषा के नीचे मघा (10) लिखें और पहले तक आते हैं। कृत्तिका (3) के नीचे विशाखा (16) आयेगा, तृतीय पंक्ति में विशाखा (16) के नीचे अनुराधा (17) लिखते हैं। उपरोक्त क्रम से लिखते जाए, चतुर्थ पंक्ति में अनुराधा (17) के नीचे भरणी आयेगा (2)। 22वां नक्षत्र अभिजित भी इसमें सम्मिलित होता है।

	शुष्क			सौम्य	जलीय		
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्रमा
नाड़ी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
नक्षत्र	3 प	4 प	5 प	6 स	7 स	8 स	9 स
	16 न	15 स	14 स	13 स	12 स	11 स	10 स
	17 न	18 न	19 प	20 प	21 प	22 प	23 प
	2 प	1 प	28 प	27 प	26 प	25 प	24 प

तालिका में प्रदर्शित प से 'पुल्लिंग', स से 'स्त्रीलिंग' एवं न से 'नपुंसकलिंग' का ग्रहण करना चाहिए।

सातों नाड़ियों के नाम व उनके स्वामी

नाड़ी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्रमा।

पहले तीन शुष्क नाड़ियां हैं, मध्य में चतुर्थ नाड़ी सौम्य नाड़ी है और अंत में तीनों नाड़ियां जलीय नाड़ियां हैं।

इस चक्र का प्राकृतिक रूप से बड़ा वैशिष्ट्य है। प्राकृतिक अवस्था की इससे सुन्दर कोई और व्याख्या नहीं हो सकती। इस चक्र का ज्ञाता प्रकृति का उपासक बन जाता है इसमें संदेह नहीं है। भारतीय ऋषियों का ज्ञान ज्ञान की चरम अवस्था है। भारतीय मासों के अनुसार सूर्य का अश्विनी, भरणी तथा कृत्तिका में गोचर वैशाख मास (अप्रैल) में होता है। उसी मास में फसल पक कर तैयार हो जाती है। किसान उसे काटने के लिए तत्पर हो जाता है। 13 अप्रैल को वैशाखी का त्यौहार मानाया जाता है और उस दिन सूर्य मेष राशि अर्थात् अश्विनी नक्षत्र पवन नाड़ी में प्रवेश करता है। इससे पहले रेवती नक्षत्र में दहन नाड़ी में होता है। प्रचण्ड नाड़ी (भरणी व कृत्तिका नक्षत्र) का स्वामी शनि एक शुष्क ग्रह है, इस समय में फसल पककर कटने के योग्य बन जाती है। वैशाख में किसान फसल काट लेता है। अब फसल से अनाज का दाना और भूसा अलग करने के लिए उसे झाड़ता है, झाड़ने के बाद भूसा

अलग करने के लिए हवा चाहिए, अब तक सूर्य पवन नाड़ी (रोहिणी नक्षत्र) में प्रवेश कर लेता है। पवन दाने से भूसा उड़ाने में सहायक होती है। अब अनाज खलियानों में चला गया, सूर्य दहन नाड़ी (मृगशिरा नक्षत्र) में आ गया, तो पृथ्वी तपने लगती है, पुनः आने वाली फसल के उगाने की शक्ति का अर्जन होने लगता है। ज्येष्ठ आषाढ़ तक यह खेत तपते हैं। आषाढ़ मध्य में सूर्य आर्द्रा में प्रवेश करता है। ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु का आगमन होता है।

सूर्य के आर्द्रा से लेकर हस्त नक्षत्र तक भ्रमण काल में 'वर्षा ऋतु' रहती है। हस्त नक्षत्र सौम्य नाड़ी में रहता है। सूर्य के इसमें भ्रमण से वर्षा से संतप्त हो चुकी जनता को राहत मिलती है। शरद आगमन की प्रतीक्षा शुरु हो जाती है। किसान खेत में बीज रोपण कर देता है। सूर्य का भ्रमण (चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा तथा मूल (19वां) नक्षत्रों) दहन, पवन, प्रचण्ड नाडियों में होता है उस समय में जनता तेज सर्दी का आनन्द लेती है, उधर सर्दी की फसल तैयार होने लगती है और वर्षा की प्यास उठ जाती है, पूर्वाषाढ़ सौम्य नाड़ी में सूर्य के गोचर से पुनः वर्षा का योग बनता है। सूर्य का धनु में प्रवेश ही धान्येश का निर्णय करता है। शरद ऋतु के बाद बसंत का आगमन होता है। सूर्य उत्तराषाढ (21) नक्षत्र में प्रवेश करते है। इनका भ्रमण उत्तराषाढ़ से श्रवण तक पौष तथा माघ महीनों का रहता है। 13 जनवरी को लोढी तथा 14 जनवरी को मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है। दक्षिण में पोंगल के नाम से उत्सव मनाते हैं। इसका कारण सर्दी की फसल (खरीफ की फसल) का तैयार होना है। इसप्रकार नाड़ी चक्र की वैज्ञानिकता तथा उपयोगिता स्पष्ट है। अनाज के पकने के बाद फाल्गुन में उत्तर में होली तथा पंजाब में होला मनाया जाता है। होली की अग्नि में अनाज का भोग लगाया जाता है। चना और गेहूं की नई फसल तैयार हो जाती है।

सप्तनाड़ी चक्र की उपयोगिता–

इसके प्रयोग से वर्षा ऋतु में किसी दिन वर्षा होगी या नहीं इसका पता कर सकते हैं। प्रति वर्ष वर्षा ऋतु के प्रारंभ में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है। बुध व शुक्र भी सूर्य के आसपास होते हैं। बुध व शुक्र भी वर्षा के पूरे नियंत्रण में सहायक होते हैं अर्थात् इनकी स्थिति वर्षा की मात्रा का निर्धारण करती है। चंद्रमा की भूमिका भी किसी से कम नहीं है। नीचे प्रदर्शित योगों से पुष्टि होती है कि चंद्रमा, बुध तथा शुक्र वर्षा ऋतु पर पूरा नियंत्रण रखते हैं।

(क) ग्रहों की परस्पर स्थिति।

(ख) सप्तनाड़ी चक्र की विभिन्न नाडियों में उनका गोचर।

(ग) (बड़े ग्रहों) मन्दगामी ग्रहों के सप्तनाड़ी चक्र में गोचर की भूमिका।

मन्दगति ग्रह भी प्रकृति एवं वर्ष चक्र पर अपना पूरा प्रभाव डालते हैं। शनि के प्रभाव से बाढ़, तूफान, खण्डवृष्टि आदि का भय रहता है। शनि एक ही राशि में बहुत समय तक रहते हैं। इनका प्रभाव सम्पूर्ण देश व पृथ्वी पर बना रहता है, इनकी विशेष दृष्टियां भी होती हैं जबकि अनके अतिरिक्त मंगल व गुरु को छोड़कर अन्य ग्रहों की एक–एक दृष्टि (सप्तम दृष्टि) ही होती है। इसीलिए इनको बड़े ग्रह (मेजर प्लेनेट) कहते हैं। शनि के एक राशि में रहने के समय में वर्षा ऋतु दो या तीन बार भी आ जाती है। तीन वर्ष तक शनि वर्षा पर एक ही प्रकार का प्रभाव नहीं डालता। शनि के प्रभाव का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए उसकी राशि के नक्षत्रों का अध्ययन कर पूर्वानुमान करना होता है। एक राशि में तीन नक्षत्र होते हैं ऐसे ग्रहों के नक्षत्र में विचरण से प्रभाव जाना जाता है। राशि में गोचर का प्रभाव तो है ही परन्तु नक्षत्र में गोचर का प्रभाव पहले वाले प्रभाव में कुछ परिवर्तन अवश्य लगाता है। फलित करते समय इसका ध्यान भी करना होता है।

सप्तनाड़ी चक्र तथा वर्षा

इस चक्र से केवल वर्षा ऋतु के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक ऋतु के विषय में तथा उसके प्रत्येक दिन का विवरण मिल सकता है। वर्षा ऋतु में कब कितना पानी पड़ेगा इसकी जानकारी भी इस चक्र से मिलती है। वर्षा ऋतु कैसी रहेगी जानने के लिए आर्द्रा प्रवेश की कुण्डली बनाते हैं। अन्य ऋतु में सप्तनाड़ी चक्र यह बताता है कि गर्मी, सर्दी, शुष्क, नम कैसा मौसम रहेगा। इससे आंधी, झंझावात, साइक्लॉन, सुनामी व बाढ़ आदि का भी पता लगाने में सहयोग प्राप्त होता है। सर्दियों की वर्षा के विषय में भी इसी से पता चलता है। उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा व पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में सर्दी की वर्षा होती है (21वें नक्षत्र से 26वें नक्षत्र तक)। शुक्र, बुध तथा चंद्रमा जब जलीय नाड़ियों में भ्रमण करते हैं तो वर्षा होती है या मौसम ठंडा हो जाता है या सुहावना हो जाता है। वर्षा ऋतु में वर्षा हो सकती है। शुष्क नाड़ियों में गोचर गर्मी, गर्म हवाएं, शुष्क हवाएं उत्पन्न करता है–

(क) मंगल, शुक्र तथा बुध प्रचण्ड नाड़ी में हो (सूर्य भी उस समय प्रचण्डादि में हो सकता है) दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, यूपी तथा हिमाचल प्रदेश में हल्की वर्षा, पहाड़ी क्षेत्र में हिमपात और कुछ प्रदेशों में अच्छी वर्षा हो सकती है। यहां प्रचण नाड़ी का अर्थ विशाखा तथा अनुराधा नक्षत्र होना यह स्थिति (नवम्बर व दिसम्बर) मार्गशीर्ष मास व हेमन्त ऋतु होती है। यदि प्रचण्ड नाड़ी में कृत्तिका व भरणी नक्षत्रों हों तो वैशाख का महीना होगा और तब शुष्क हवाएं चलेंगी।

(ख) सर्दियों में मंगल तथा शुक्र सौम्य नाड़ी में हो या नीर नाड़ी में हो, ठण्डी हवा, वर्षा और कुछ स्थानों में हिमपात हो सकता है।

वर्षा ऋतु का काल :–

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय से (22 जून के लगभग) वर्षा ऋतु का समय आरंभ होता है। स्वाति नक्षत्र का भ्रमण पूरा करते–करते वर्षा ऋतु समाप्त हो जाती है। चंद्रमास आषाढ़ कृष्ण पंचमी से कार्तिक कृष्ण एकादशी तक रहता है। सप्तनाड़ी चक्र के अनुसार आर्द्रा प्रवेश (सौम्य नाड़ी) से प्रारंभ होकर हस्त नक्षत्र (सौम्य नाड़ी) तक वर्षा ऋतु रहती है।

(क) सूर्य व चन्द्रमा के नक्षत्र

सूर्य के–रोहिणी, मृगशिरा, पू. फाल्गुनी, उत्तर फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, तथा पू. भाद्रा। (13 नक्षत्र)

चंद्रमा के– अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्या, आश्लेषा, मघा, पू. आषाढ़, उ. आषाढ़, श्रावणा, धनिष्ठा, उ. भाद्रा तथा रेवती। (14 नक्षत्र)

(ख) सूर्य तथा चन्द्रमा के एक–दूसरे के नक्षत्र में होने का फल

(1) चन्द्रमा के स्वनक्षत्र में	पवन बहे
(2) चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्र में हो	वर्षा होगी
(3) सूर्य स्वनक्षत्र में हो	अनावृष्टि
(4) सूर्य तथा चन्द्रमा, दोनों चन्द्रमा के नक्षत्र में	कम वर्षा

(ग) सूर्य तथा चन्द्रमा विभिन्न लिंगों के नक्षत्र में

(1) सूर्य तथा चंद्रमा एक पुरुष तथा दूसरा स्त्री नक्षत्र में– वर्षा होगी

(2) सूर्य तथा चंद्रमा एक स्त्री तथा दूसरा नपुंसक नक्षत्र में–कहीं कहीं वर्षा होगी

(3) सूर्य तथा चंद्रमा दोनों स्त्री नक्षत्र में या पुरुष नक्षत्र में हो– बादल छाये रहें।

(4) सूर्य चंद्रमा देानों नपुंसक नक्षत्र में हो– वर्षा नहीं होगी।

(5) सूर्य तथा चंद्रमा चंद्रमा के नक्षत्र में– कम वर्षा।

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय की ग्रहस्थितियां भी उस वर्ष की वर्षा का पूर्वानुमान करने में सहायक रहती है। इस समझने के लिए सम्वत् 2079 के पंचांग की स्थिति देखकर आर्द्रा प्रवेश कुण्डली का निर्माण करते है तो उसके अनुसार सूर्य ने 22 जून 2022 को प्रातः 11.42 पर आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश किया। आर्द्रा प्रवेश की कुण्डली के अनुसार लग्न सिंह है जो अग्नितत्त्व का कारक है तथा लग्न पर शनि एवं राहु की पूर्ण दृष्टि रही। लग्नेश सूर्य पर मंगल केतु की दृष्टि से विश्व में तथा भारत में तापमान में असाधारण वृद्धि के योग बने किन्तु दशम भाव में बुध शुक्र की एकसाथ चतुष्पदराशि वृष में स्थिति से वर्षा काल में अनुकूल वर्षा के योग बने। जून मास के अन्त में भारत के दक्षिण व समुद्रतटीय भागों में सक्रिय होकर मानसून पूरे चौमासे में अच्छी प्रकार से बरसा।देश में कई स्थानों पर बाढ़ के आसार भी बनें। राजस्थान सहित उत्तरपश्चिम के राज्यों के जलस्रोतों में पानी की अच्छी आवक के साथ अतिवृष्टि से नुकसान भी खूब हुआ। 29जुलई को बुध ने राशि परिवर्तन किया। इसके प्रभाव से राजस्थान सहित पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब एवं उत्तराखण्ड में अच्छी वर्षा के योग बने।पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलनएवं बादल फटने की घटनाओं से जनहानि भी हुई। अक्टूबर के प्रथम दिन शुक्र का अस्त होना खड़ी फसलों के लिए नुकसानदायी रहा। राजस्थान सहित दिल्ली, पंजाब आदि प्रान्तों में कृषि का नुकसान हुआ। सर्दी की ऋतु मेंपर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात, भूकम्प आदि की सम्भावना भी बन रही है।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

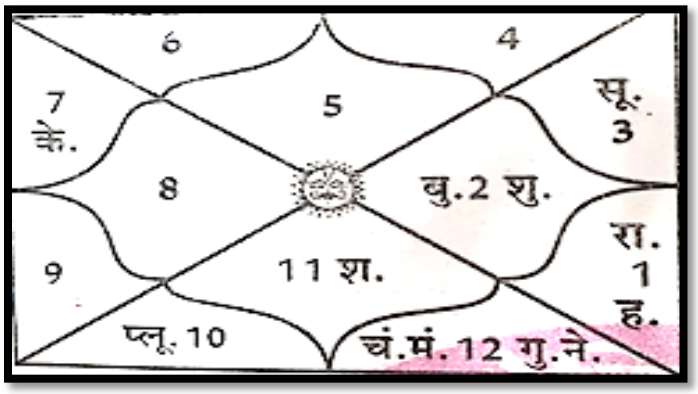

आर्द्रा प्रवेश के समान नवसम्वत्सर के समय के राजा मन्त्री आदि की स्थिति के अनुसार भी वर्षा एवं सम्पूर्ण वर्ष के फलाफल का विचार किया जाता है। यह सम्वत् नल नाम का सम्वत् है। सम्वत् के फल में नल सम्वत् श्रेष्ठ वर्षा

का कारक होता है। जब जब सम्वत् का राजा शनि होता है तब तब अनियमित वर्षा होती है।मन्त्री गुरु भी अच्छी वर्षा का कारक होता है। सस्येश शनि वर्षा में न्यूवता लाता है। धान्येश शुक्रसमान्य वर्षा का कारक बनता है। जिस सम्वत् में मेधेश बुध होता है तब अच्छी वर्षा होती है।रसेश चन्द्रमा भी अच्छी वर्षा का कारक होता है। धनेश शनि के कारण वर्षा से कृषि को नुकसान होता है।

रोहिणी के वास से भी वर्षा का अनुमान किया जाता है। जब रोहिणी का वास समुद्र में होता है तब श्रेष्ठ वषा के योग बनते हैं। इसी प्रकार जलस्तम्भ, तृणस्तम्भ, वायुस्तम्भ एवं अन्नस्तम्भ के द्वारा भी वर्षा का अनुमान किया जाता है। चैत्रशुक्ल प्रतिपदा के नक्षत्र के आधार पर जल स्तम्भ, वैशाखशुक्ल प्रतिपदा के नक्षत्र से तृणस्तम्भ, ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा के नक्षत्र से वायुस्तम्भ का एवं आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से अन्नस्तम्भ का निर्धारण कर वर्षा का अनुमान किया जाता है।

भारतीय परिवेश में वर्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पूरा वर्ष वर्षा पर ही निर्भर करता है। इसलिए समस्त ऋतुओं में वर्षा के अनुमानों को लेकर ऋषि महर्षि अधिक सचेत रहे हैं। इसलिए सटीक मूल्यांकन के लिएपूरे वर्ष के ग्रहयोगों एवं प्राकृति परिवर्तनों का सूक्ष्म निरीक्षण कर ही वर्षा का निर्धारण किया जाता है।

***प्रोफेसर**
भाषाविज्ञान
राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय,
जयपुर

सन्दर्भः–

1. यास्क 2.25
2. हलायुध
3. ऋग्वेद 1.75.1
4. ऋग्वेद 10/97/1
5. ऋग्वेद 3/47/3
6. ऋग्वेद 3/53/7–8
7. ऋग्वेद 2/37/3